डा. प्रदीप कुमार राय (एसोसियेट प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम)
विषय – राजनीति-शास्त्र
कक्षा – बी.ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट-03 ; सत्र 2019-20
पेपर – 08
दिनांक – 11.07.2020
टॉपिक – भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में क्रांतिकारी आंदोलन के उदय के कारण, उद्देश्य एवं कार्यपद्धति

क्रांतिकारी आंदोलन – राष्ट्रीय जागृति एवं ब्रिटिश सत्ता के विरोध के दौर में एक ऐसे वर्ग का उदय हुआ जो उदारवादी एवं उग्रवादी से अलग क्रांतिकारी था और अपने लक्ष्य को शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त करना चाहता था। नवयुवकों का यह वर्ग हिंसा तथा आतंक द्वारा शासकों को भयभीत कर भारत से ब्रिटिश शासन को समूल नष्ट करना चाहता था। राष्ट्रीय आंदोलन की यह धारा ही क्रांतिकारी आंदोलन था। जैसे-जैसे सरकार द्वारा दमनात्मक नीति अपनाई गई वैसे-वैसे इनकी हिंसा भी तेज होती चली गई। भारतीय क्रांतिकारियों के कार्यों की पृष्ठभूमि में एक निश्चित दर्शन और लक्ष्य था जो ब्रिटिश शासन को समाप्त कर स्वतंत्रता प्राप्त करना और एक ऐसी न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना से संबंधित था जिसमें कमजोर वर्ग के प्रति अन्याय की कोई स्थिति न रहे। क्रांतिकारी आंदोलन की अवधि प्रथम 1906 से 1914, द्वितीय 1919 से 1932 तथा तृतीय 1939 से 1945 तक की रही है।

क्रांतिकारी आंदोलन के उदय के कारण – क्रांतिकारी आंदोलन के उदय के पीछे ऐसे कुछ विशेष कारण बताये जा सकते हैं जो इन्हें शांतिपूर्ण निवेदन एवं अहिंसक आंदोलन से पृथक करते हैं जिसे निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है –

(1.) विद्वान और चिंतनशील – क्रांतिकारियों का अधिकांश वर्ग विद्वान, चिंतनशील और विश्व इतिहास से भिज्ञ था और विभिन्न राष्ट्रों के स्वतंत्रता आंदोलन की उन घटनाओं और कारणों को जानता था कि याचना एवं अहिंसात्मक आंदोलन से आजादी नहीं प्राप्त हो सकती है इसके लिये सशस्त्र प्रहार का मार्ग श्रेयस्कर है।

(2.) उदारवादियों की विफलता – क्रांतिकारियों को इस बात का ज्ञान हो गया कि उदारवादियों की याचना और अनुनयपूर्ण नीतियों का अपेक्षित परिणाम नहीं निकला अतः इस धारणा को बल मिला कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये रक्तिम क्रांति आवश्यक है।

(3.) दमनकारी नीति – ब्रिटिश सरकार अपने दमनकारी नीति और कानूनों द्वारा जनांदोलन को कुचलने पर आमदा थी। स्वतंत्रता का नाम लेना भी अपराध था। परिणामतः देशभक्तों ने गुप्त और हिंसक क्रांतिकारी आंदोलन का मार्ग अपनाया।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य — क्रांतिकारी विचारधारा, क्रियाकलाप एवं आंदोलन का एक निश्चित लक्ष्य था – देश की स्वतंत्रता। देश के लिये 'पूर्ण स्वतंत्रता' का नारा सर्वप्रथम क्रांतिकारियों ने ही दिया था और उसकी प्राप्ति के मार्ग में अप्रतिम त्याग, तपस्या, कष्ट और संघर्ष किया। ब्रिटिश दासता से देश को मुक्त कर वे एक न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना करना चाहते थे। 4 June, 1929 को सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने सेशन जज के सम्मुख बयान दिया था कि, 'क्रांति से हमारा अभिप्राय यह है कि आज की वस्तुस्थिति और समाज व्यवस्था, जो स्पष्ट रूप से अन्याय पर टिकी हुई है- को बदला जाये। क्रांति व्यक्ति द्वारा व्यक्ति के शोषण को समाप्त करने और हमारे राष्ट्र के लिये पूर्ण आत्मनिर्णय का अधिकार प्राप्त करने के लिये है।" वे विदेशी शासन का अंत कर सच्चे सच्चा लोकतंत्र स्थापित करना चाहते थे जिसमें कृषकों और मजदूरों का हित साधन हो। वे व्यक्तिगत रूप से अंग्रेजों के विरुद्ध नहीं थे वरन् भारत में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध थे। उनका स्पष्ट और निश्चित मत था कि देश की स्वतंत्रता के महान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये किसी भी प्रकार के साधनों का उपयोग उचित है।

कार्यपद्धति — क्रांतिकारियों की कार्य पद्धति काफी कठिन एवं कष्टप्रद थी। उन्होंने ब्रिटिश दमन और अत्याचार से मुक्ति के लिये हिंसक एवं रक्तरंजित साधनों को अपनाना श्रेयस्कर समझा और इसके लिये 1900 से 1914, 1919 से 1932 एवं 1939-1946 तक उन समस्त उग्र, हिंसात्मक तथा कठोर कार्य किये जिससे राष्ट्रीय आंदोलन को तेज धार मिली और यह अहिंसात्मक आंदोलन का पूरक बनकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता को अंततः प्राप्त करने में व्यापक रूप से सहायक बन सका। इस आंदोलन से न केवल समूचे राष्ट्र में नवीन ओज, जोश और चेतना का संचार हुआ अपितु ब्रिटिश शासन की भारत में नींव हिल गई। उन्होंने देशभक्ति तथा साहस की जिस भावना का परिचय दिया उसके विश्व में कम ही उदाहरण देखने को मिलते हैं।

Scanned with CamScanner